ISSN : 2456-8856

पंजीयन संख्या RNI No.: MPHIN/2002/9510 डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

UGC Care Listed and Peer Reviewed Referred Bilingual Monthly International Research Journal

प्रेषण दिनांक 30 पृष्ठ संख्या 28

आश्वस्त

वर्ष 25, अंक 233 मार्च 2023

अन्तर्राष्ट्रीय महिला-दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

संपादक - डॉ. तारा परमार

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन की अन्तर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका

वर्ष : 25 अंक 233
मार्च 2023

आश्वस्त

(सन् 1983 से निरंतर प्रकाशित)

RNI No.: MPHIN/2002/9510
ISSN : 2456-8856

भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, उज्जैन (पंजीयन क्रमांक 2327 दिनांक 13/05/1999) की मासिक पत्रिका

संस्थापक सम्पादक
डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी

संरक्षक
सेवाराम खाण्डेगर
11/3, अलखनन्दा नगर, बिड़ला हॉस्पिटल के पीछे,
उज्जैन मो.: 98269-37400

परामर्श
आयु. सूरज डामोर IAS
पूर्व सचिव-लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण वि.
म.प्र.शासन, भोपाल मो. 094253-16830

सम्पादक
डॉ. तारा परमार
9-बी, इन्द्रपुरी, सेठी नगर, उज्जैन-456010
मो. 94248-92775

सम्पादक मण्डल :
डॉ. जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली
डॉ. खन्नाप्रसाद अमीन, गुजरात
डॉ. जसवंत भाई पण्ड्या, गुजरात
डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, म.प्र.

Peer Review Committee
डॉ. श्रवणकुमार मेघ, जोधपुर(राजस्थान)
प्रो. दत्तात्रय मुरुमकर, मुंबई (महाराष्ट्र)
प्रो. रश्मि श्रीवास्तव, उज्जैन (म.प्र.)
डॉ.बी.ए.सावंत, सांगली (महाराष्ट्र)

कानूनी सलाहकार
श्री खालीक मन्सूरी एडव्होकेट, उज्जैन

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	अपनी बात	डॉ. तारा परमार	03
2.	होल्कर रियासत का जल प्रबंधन (1901-1950)	दिनेश महाजन (शोधर्थी)	04
4.	भारतीय जाति-व्यवस्था और बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का चिंतन	डॉ. बन्ना राम मीना	08
5.	संजना कौल की कहानी 'काठ की मछलियाँ ' में मल्लाहों की जीवन त्रासदी	डॉ. मनीषा	12
6.	Negotiating Digital Space : A Study of New media platforms by Dalits	Dr. Krishna Sankar Kusuma Saroj Kumar-Research Scholar	15
7.	Forced Migration and Displacement as a Result of Climate Change is a Looming Crisis all over The world : an Analytical Study	Mr. Pawan Kumar	22

UGC Care Listed Journal

खाते का नाम – आश्वस्त (Ashwast)
खाते का नं.– 63040357829
बैंक – भारतीय स्टेट बैंक,
शाखा– फ्रीगंज, उज्जैन (Freeganj, Ujjain)
IFS Code - SBIN0030108

Web : www.aashwastujjain.com
E-mail : aashwastbdsamp@gmail.com

एक प्रति का मूल्य	:	रुपये 20/-
वार्षिक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 200/-
आजीवन सदस्यता शुल्क	:	रुपये 2,000/-
संरक्षक सदस्यता शुल्क	:	रुपये 20,000/-

विशेष : सम्पादन, प्रकाशन एवं प्रबंध अवैतनिक तथा पत्रिका में प्रकाशित विचारों से सम्पादक-मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायालय क्षेत्र उज्जैन रहेंगा।

अपनी बात

भारतीय समाज में दर्शन और आध्यात्म के स्तर पर तो महिला को देवी और पूज्य समझा जाता है, लेकिन व्यवहारिक जीवन में उसे पुरुषों से दोयम दर्जे का ही माना जाता रहा है।

डॉ. अम्बेडकर का मत था कि सामाजिक क्रान्ति एवं परिवर्तन में महिला वर्ग को भी पुरुष वर्ग की सहयोगी बनाना होगा। आपने बम्बई की एक महिला सभा को संबोधित करते हुए कहा–''महिला राष्ट्र की निर्मात्री है, हर नागरिक उसकी गोद में पलकर बड़ा होता हैं। महिला को जागृत किये बिना राष्ट्र का विकास संभव नहीं है।'' उन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने और राष्ट्रीय उन्नति में भागीदार बनाने का आह्वान किया था। 16 जून 1936 को बम्बई के दामोदर हाल में महिलाओं को संबोधित करके उन्होंने कहा–''नारी समाज का गहना है, सभी को उसे सम्मान देना चाहिये।'' उन्होंने नारी में आत्म–सम्मान जगाने के लिये कहा–आप साहसी बनो, स्वाभिमान से रहो। गरीबी से अपने स्वाभिमान को बलि मत चढ़ाओ। आप सभी इंसान की तरह जीयो, स्वाभिमान के साथ सिर ऊँचा करके जीयो।

18 जुलाई 1942 को नागपुर के अपने भाषण में डॉ. अम्बेडकर ने कहा था–''किसी भी समाज की उन्नति का अनुमान उस समाज की नारियों की उन्नति को देखकर ही लगा सकते हैं।'' आगे उन्होंने कहा–शिक्षा, स्वच्छता, महत्वाकांक्षा, आत्म विश्वास तथा बराबरी का अधिकार नारी को दिया जाना समाज का कर्तव्य है।

विगत दशकों में महिला विकास की बात करें तो कह सकते हैं कि महिलाओं ने सभी क्षेत्रों में अपनी सफलता के झण्डे गाड़े हैं। यह परिदृश्य बेहद सुखद और उत्साहवर्धक है, परन्तु दूसरी ओर आज भी लाखों–करोड़ों महिलाएं शोषण एवं उत्पीड़न की शिकार हैं। छेड़छाड़, घरेलू हिंसा, दहेज प्रताड़ना, कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार, कार्यक्षेत्र में यौन उत्पीड़न आदि की घटनाएं थम नहीं रही है आखिर क्यों?

आज का युग वैज्ञानिक युग के साथ–साथ भूमण्डलीयकरण का युग है। आधुनिककाल तक पहुंचने के पश्चात् उत्तर आधुनिक काल और अब इक्कीसवीं सदी में पहुंच गये हैं। इस समयावधि में जीवन के विविध क्षेत्र में परिवर्तन आये हैं। भारत विश्व गुरु बनने जा रहा है। 'आजादी का अमृत–महोत्सव' मना रहे हैं। ऐसे में क्या महिला की प्रतिमा भी विकसित हुई है? नारी की पीड़ा, वेदना अभी तक समाप्त नहीं हुई है और न ही उस पर होने वाले अत्याचार कम हुए हैं।

यद्यपि सरकार द्वारा इन सभी समस्याओं के समाधान के लिये सन् 1953 में केन्द्रीय समाज कल्याण बोर्ड का गठन, 1992 में राष्ट्रीय महिला आयोग की स्थापना के पश्चात सन् 2001 में महिला सशक्तिकरण की अवधारणा के अस्तित्व में आने से इस वर्ग को आशा की एक किरण दिखाई दी। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक (2001 से 2010) से लगाकर वर्तमान तक महिला सशक्तिकरण का काल माना जा रहा है, इस अवधि में महिलाएं आर्थिक रूप से स्वावलंबी जरूर बनी है लेकिन सामाजिक परिवेश में अधिकांश महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती।

वर्तमान सदी में महिला की स्थिति एक विचारात्मक आंदोलन है जिसके साथ जुड़े हुए विचारों को स्वतंत्रता, समानता और न्याय के सामान्य सिद्धांतों के संदर्भ में यह पुरुष के मुकाबले महिला की स्थिति, भूमिका और अधिकारों से सरोकार रखता है।

अतः संविधान के अनुच्छेद 14–16, 23, 42, 44 और 46 आदि के द्वारा भारतीय महिलाओं को अधिकार प्राप्त हैं। इनका निष्पक्षता और निष्ठापूर्वक पालन करके शासन, प्रशासन भारतीय महिलाओं के विकास मार्ग को निष्कंटक करने में महती भूमिका अदा करे यही देश की सभी महिलाएं चाहती है।

– डॉ. तारा परमार

होल्कर रियासत का जल प्रबंधन (1901–1950)

– दिनेश महाजन (शोधार्थी)

सारांश :–

मोहन जोदड़ो एवं हड़प्पा सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी। यह इस बात का प्रतीक है, कि भारत में नगरीकरण प्रक्रिया विभिन्न क्षेत्रों में प्राचीनकाल से दिखाई देती है। इस क्रम में इंदौर की स्थापना मालवा के सूबेदार मल्हारराव होलकर के द्वारा की गई थी। तब से इंदौर का क्रमिक विकास होता रहा है। उन्नीसवीं शताब्दी और बीसवीं शताब्दी में इंदौर के नगरीकरण और औद्योगिकीकरण को गति मिली, जिससे इंदौर की जनसंख्या में वृद्धि होती रही है और नगरीकरण के विभिन्न तत्वों का प्रसार भी देखने को मिलता है। इन तत्वों में सबसे महत्वपूर्ण नगरीकरण की आधार विशेषता बढ़ती हुई जनसंख्या एवं जल प्रबंधन की है। परंतु नगर की जलप्रबंध व्यवस्था आरंभ से 1950 तक समय – समय पर उसकी आवश्यकताओं एवं पूर्ति के लिए मालवा के शासकों एवं जनता ने निजी स्तर पर जल प्रबंधन का कार्य किया। इंदौर प्राचीन काल से अपनी जल व्यवस्था तालाबों और कुएँ से करता आ रहा था । परंतु जनसंख्या वृद्धि ने इंदौर की जल प्रबंधन पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया। जल व्यवस्था वर्षा के कारण या जनसंख्या वृद्धि के कारण संघर्ष ग्रस्त रही। इसलिये 1939 में महाराजा यशवंतराव होलकर ने यशवंत सागर परियोजना के माध्यम से जल व्यवस्था बनाए रखने का कार्य किया। परन्तु वह अपर्याप्त थी और देश की आजादी के बाद भी प्रदेश की सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया, जिसके परिणामस्वरूप इन्दौर में जल समस्या बनी रही। इसी का परिणाम यह रहा कि इन्दौर में नर्मदा जल आंदोलन 1970 में हुआ । देश की आजादी के बाद प्रदेश की सरकार ने इस ओर ध्यान नहीं दिया, जिसका परिणाम नर्मदा आंदोलन जलापूर्ति के लिए हुआ।

Key words : यशवंत सागर, जल प्रबंधन, जल व्यवस्था, होल्कर, अकाल, परियोजना, तालाब, बाँध, बिलावली जनसंख्या।

प्रस्तावना

मोहन जोदड़ो और हड़प्पा कालीन सभ्यता के विस्तार काल से ही वर्तमान इंदौर का उत्तरोत्तर विकास होता रहा है। निरंतर विकास की दिशा में इंदौर का चौतरफा विकास हुआ। इंदौर नगर की स्थापना 1715 में कम्पेल के जमींदारों द्वारा व्यापारिक उद्देश्य को लेकर की गई थी। रावराजा नन्दलाल मंडलोई को मुगल बादशाह से कर मुक्त व्यापार की अनुमति 3 मार्च 1716 को प्राप्त हुई थी। सन 1732 में इंदौर जिले के होलकर राज्य के संस्थापक सूबेदार मल्हार राव होलकर ने अपनी जागीर में मिला लिया। सन् 1818 की मंदसौर संधि के पश्चात् इंदौर स्थायी रूप से होल्कर राज्य की राजधानी बन गया । होल्कर राज्य के एक ही सफल प्रशासक तुकोजीराव होलकर द्वितीय द्वारा इंदौर नगर में नगरपालिका की स्थापना की ।

किसी भी नगर के विस्तार के लिए जल की आवश्यकता होती है। जल नगर के औद्योगिक विकास का साधन होता है। वर्तमान में इंदौर जल प्रबंधन पर 350 करोड़ वार्षिक खर्च करता है। इसके बावजूद भी मात्र 3 प्रतिशत घरों में ही रोज जलप्रदाय हो रहा है। किंतु 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इंदौर की जल प्रदान अवस्था इस प्रकार थी, कि संपूर्ण नगर को जल प्राप्त होता था।[1]

इंदौर शहर किसी ऐसी नदी के निकट नहीं बसा है, जो बड़ी हो और 12 ही माह अच्छा और अधिक पानी, जहाँ से प्राप्त किया जा सके। इस नगर के उत्तर दक्षिण दिशा में सरस्वती और खान नदी बहती है, किंतु यह भी

अधिक जल बहाव वाली नदियां नहीं है।[2] समय – समय पर पानी का अकाल इंदौर नगर में पड़ता रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ के शासनकर्ताओं को निरंतर पेयजल की समस्याओं का निराकरण करने के लिए गंभीरता से विचार विमर्श करना पड़ा। जब– जब पानी की कमी हुई तब–तब अनेक योजनाएं सामने आई। इंदौर नगर के लिए पीने का पानी प्राप्त करने का सवाल सदा ही विचारणीय समस्या के रूप में व्याप्त रहा है, और आज भी है। यहाँ विभिन्न भागों में कुँए पहले बने हुए थे। उनके पानी का उपयोग पीने के लिए किया जाता था। खान, सरस्वती नदियों का पानी इतना गंदा नहीं था और नागरिक नहाने–धोने एवं पीने के लिए नदी के पानी का उपयोग करते थे। उस समय कुँए और नदी दोनों पानी प्राप्त करने के साधन थे।[3]

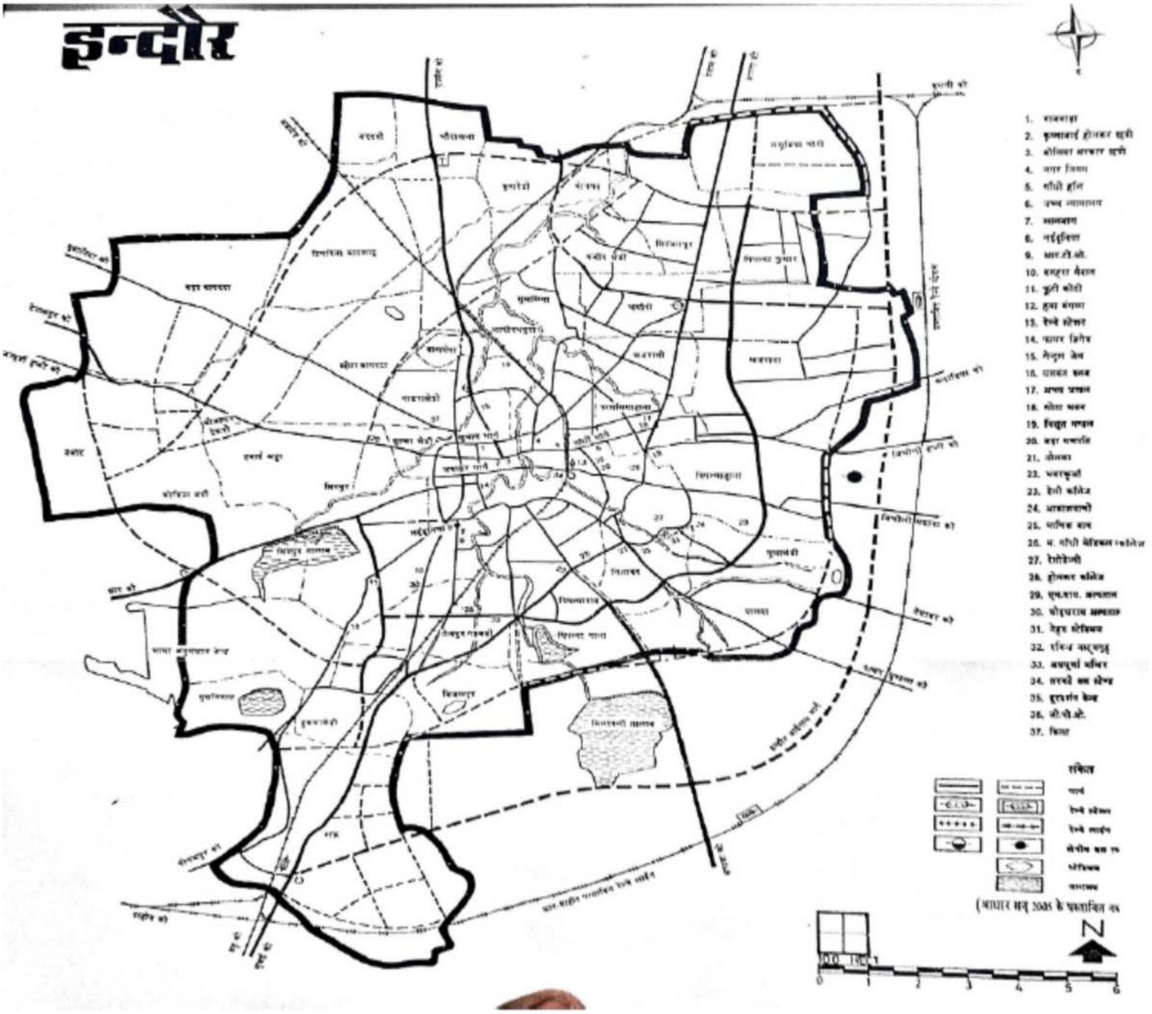

इंदौर का मानचित्र और तालाब[4]

इंदौर की बढ़ती हुई जनसंख्या और पानी की कमी के परिणामस्वरूप तत्कालीन प्रशासकों ने सिरपुर और पिपलियापाला ऐसे दो तालाब बनाएँ। इनका क्षेत्रफल क्रमशः 4.5 वर्ग मिल एवं 9.3 वर्ग मील था। इन दोनों तालाबों से नागरिकों को पीने के लिए प्रतिदिन 3 लाख गैलेन पानी दिया जाने लगा।[5]

1905 तक इंदौर में पानी का बन्दोबस्त पिपलियापाला से होता था और इसके अलावा, कई निजी और सार्वजनिक कुएं भी थे। जिनसे लोग पानी भरते थे। इन तालाबों की जिंदगी अब खत्म हो चुकी थी और उनका उपयोग नहीं होता था। इनमें मिट्टी जम गई थी। समय के साथ बिलावली और लिंबोदी के तालाब बने और 1939 में गुरुत्वाकर्षण के बल पर इंदौर को अशुद्ध जल देने की प्रणाली चलती रही। रेसिडेंशियल एरिया का अलग इंतजाम खान नदी के पास बने कुएं से होता था और इससे 3 लाख गैलेन पानी प्रतिदिन मिलता था।[6]

बिलावली और लिंबोदी जलाशयों का जल ग्रहण क्षेत्र सिर्फ 18.40 वर्ग मील है और सूखे के वर्षा में वह बेकाम हो जाते हैं। नगर को कई प्रकार अकाल का सामना करना पड़ा था। इंदौर नगर की आबादी प्रारंभिक अवस्था में जूनी इंदौर व उसके आस पास तक केंद्रित थी।[7] सन् 1818 के बाद राजवाड़ा बना तो उसके चारों ओर बाजार और आवासीय बस्तियों का विकास हुआ। इंदौर नगर के विकास की भावी संभावनाओं के प्रति होलकर महाराजा बहुत आशान्वित थे। उन्होंने विकास की संभावनाओं को तलाशने के लिए सुप्रसिद्ध नगर योजना विशेषज्ञ पैट्रिक गिडिस की सेवाएं प्राप्त की। पैट्रिक गिडिस ने नगर विकास की संपूर्ण संभावनाओं का अध्ययन किया और जल प्रबंधन पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की ।

उनकी यह रिपोर्ट दो भागों में प्रकाशित हुई । जिसमें जल प्रबंधन हेतु कुछ बिंदुओं पर विचार किया गया। चतुर्थी बिंदु इंदौर नगर की जल आपूर्ति के विभिन्न स्रोतों, सिंचाई हेतु तालाबों जल स्तर को बनाए रखने हेतु आवश्यक उपाय, नए जल स्रोतों को विकसित करने की अनुशंसा की गई। पांचवें बिंदुमें इंदौर की जल निकासी व्यवस्था का अध्ययन किया और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा नगर को स्वच्छ रखने हेतु उपयुक्त जल निकासी व्यवस्था को सुविचारित रूप से प्रस्तुत किया।[8]

1916–17 बिलावली तालाब का निर्माण किया गया था। और वह कुछ वर्षों मैं ही अपर्याप्त होने लगा। 1925–26 में अकाल पड़ा और बिलावली लंबोदी तथा पिपलियापाला में बहुत कम पानी रह गया। 1926 में आबादी 1,25,000 थी। इस अकाल के दौरान शहर के सारे कुएं को साफ किया गया तथा मशीन से नलकूप खोदने की कोशिश की गई और कुछ नए कुएं खोदने और जैसे तैसे हालात पर काबू पाया गया।[9]

इस आकार के बाद इंदौर के लिए पर्याप्त तथा स्थायी जल योजना की चर्चा चल पड़ी। सन् 1928 में विशेषज्ञों द्वारा सर्वे तथा इंजीनियरिंग जांच का काम शुरू हुआ। यह जांच 1933 तक चली और गम्भीर नदी को एक जलस्रोत मानकर एक ऐसी योजना बनी, जो एक लाख पचास हजार की आबादी को 30 गैलेन पानी को प्रतिदिन देने की क्षमता रखती थी । यशवंत सागर की यह योजना 1939 में पूरी हुई। इंदौर से 14 मील दूर 1600 फीट लम्बा मिट्टी का बांध बनाया गया।[10] इस बांध के पीछे यशवंत सागर नामक जलाशय की क्षमता तब 80 करोड़ 30 लाख घनफुट पानी की थी । मिट्टी जमने से यह क्षमता 70 करोड़ घन फुट रह गयी ।

यशवंत सागर का विहंगम दृश्य[11]

कलारिया में अशुद्ध पानी का पंपिंग स्टेशन बनाया गया। कलारिया से देव धरमटेकरी तक 27 इंच के व्यास का एक 29 हजार फुट लंबा नल पानी चढ़ाने के लिए डाला गया। देवथरम टेकरी पर पानी शुद्ध करने के लिए एक यन्त्र लगाया गया तथा इंदौर तक पहुंचाने के लिए 26 हजार फुट लम्बा नल डाला गया। जिसमे गुरुत्वाकर्षण से बहकर पानी जाता था। शहर में दो पानी की टंकियां थी । एक तुकोजीगंज में जिसकी क्षमता से 7.5 लाख गैलन थी । दूसरी टंकी मानिक चौक में 5 लाख गैलेन की क्षमता रखती थी। योजना यह थी कि 16 घंटे के पंपिंग के आधार पर 45 लाख गैलेन पानी प्रतिदिन वितरित किया जाए। 16 घंटे इसलिए कि उन दिनों 24 घंटे बिजली उपलब्ध नहीं थी। स्थानीय बिजलीघर 8–8 घंटे की पालियो में दो बार चलता था। इस कारण जरूरत से ज्यादा बड़ी मशीन खरीदना पड़ी।[12] जल शुद्ध यंत्रालय बनाना पड़ा। नए नल डालने पड़े। 1939 तक यशवंत सागर की योजना पूर्ण हुई थी, कि आबादी बेतहाशा बढ़ने लगी। स्टॉप 2 लाख 23 हजार की अंतिम आबादी का लक्ष्य रखकर 30 लाख गैलेन पानी देने का बंदोबस्त किया गया। योजना बनते–बनते विस्तार हो गया। बिलावली का अशुद्ध पानी उद्योगों को और बिजलीघर को दिया जाने लगा।[13]

आबादी अंदाजन से कुछ ज्यादा ही बढ़ी। अंतिम आबादी 1961 में होने की थी, वह 1945 में हो गई। शहर का विकास और तेजी से होने लगा और यहाँ की आबादी सन् 1961 की जनगणना में 3.93 लाख हो गयी। इस आबादी के लिए पानी का स्रोत जो करीब 20 वर्षों तक पर्याप्त था । वह कम महसूस होने लगा और धीरे–धीरे यहाँ के नागरिको को पानी के लिए भयंकर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।[14] सन् 1965–66 में लगातार वर्षा में कमी हुई, जिससे जल संकट बढ़ता गया समय–समय पर पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से जल यंत्रालय को विकसित करने का प्रयास किया। किंतु उन सब प्रयास पश्चयात् एक सत्य सबने स्वीकार किया, कि जब तक इंदौर के लिए यशवंत सागर के अलावा एक और स्थायी स्रोत नहीं खोजते तब तक इंदौर की जल्द समस्या का हल नहीं किया जा सकता । समय समय पर इंदौर के नागरिको ने कई समस्याओं से शासन को अवगत कराया, लेकिन शासन की हठधर्मिता और चंबल योजना की तरफ शासन का रुख होने से इंदौर के नागरिको में काफी असंतोष था। यही असंतोष इंदौर में नर्मदा आन्दोलन के रूप में उजागर हुआ। जहाँ लोग इंदौर में नर्मदा के पानी लाने के लिए आंदोलन करने लगे और नारे लगाने लगे। नर्मदा मैया इंदौर चलोश इस तरह इंदौर के नागरिको ने इंदौर के लिए एक स्थायी हल खोज लिया था । जिससे इंदौर को निरंतर पानी मिलता रहे ।

इस तरह इंदौर में 1901 से लेकर 1960 तक जल वितरण की व्यवस्था थी। जिससे कई बार कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इंदौर नगर वासियों ने इंदौर स्थायी जल्द समस्या हल के लिए नर्मदा योजना को चुन लिया था और नर्मदा के पानी इंदौर लाने के लिए तत्पर थे। इसके लिए इंदौर में 1970 में एक बड़ा आंदोलन हुआ । जो 49 दिनों तक चला और शासन और प्रशासन को इंदौर की नागरिको के सामने झुकना पड़ा और उनकी मांगें स्वीकार करनी पड़ी। इस तरह 7 जनवरी 1972 को नर्मदा योजना का शिलान्यास तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के कर कमलों से हुआ । इस इंदौर – महू में निरंतर जल प्राप्त होता रहा। इसके लिए समय–समय पर प्रथम चरण, द्वितीय चरण और तृतीय चरण द्वारा नर्मदा योजना का पानी इंदौर निरंतर रूप से लाया गया। इस तरह इंदौर की जल आवश्यकताओं की पूर्ति हुई और इंदौर एक महानगर के रूप में उभर कर सामने आया।

शोधार्थी – दिनेश महाजन
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर
मोबा. 9752813751

संदर्भ :

1. बापट, सी.एन. नागरिक (नर्मदा योजना), लाभचंद प्रकाशन, इंदौर. 1972. पृष्ठ – 11
2. पूर्वोक्त, पृष्ठ–12
3. यादव, शिवनारायण अपना इंदौर (भाग दृ 4), लाभचंद प्रकाशन, इंदौर. 2017. पृष्ठ– 11
4. शर्मा, दीपेश. दैनिक भास्कर. 5 मार्च 2022, पृष्ठ–6
5. नई, दुनिया. समाचार पत्र. 7 जनवरी 1972, पृष्ठ–4
6. यादव, शिवनारायण अपना इंदौर (भाग – 3), लाभचंद प्रकाशन, इंदौर. 2017. पृष्ठ–115
7. चाँदोरकर, अभिलाषा. इंदौर का शहरीकरण (शोध ग्रन्थ), पृष्ठ–184
8. गिडिस, पैट्रिक. दरबार ऑफ इंदौर, पृष्ठ–56
9. पूर्वोक्त, पृष्ठदृ57
10. नई दुनिया, समाचार पत्र. 7 जनवरी 1972, पृष्ठ– 5
11. छजलानी, अभय. अपना इंदौर (भाग – 3), लाभचंद प्रकाशन, इंदौर. 2017. पृष्ठ – 116
12. पूर्वोक्त, पृष्ठ–117
13. पूर्वोक्त, पृष्ठ–118
14. बापना, पी.सी. नागरिक, लाभचंद प्रकाशन, इंदौर. 1972. पृष्ठ– 9

भारतीय जाति–व्यवस्था और बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर का चिंतन

– डॉ. बन्ना राम मीना

सारांश

वर्तमान दौर में बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन और विचारों पर लगातार विचार–विमर्श हो रहा है। राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में बाबा साहब के विचारों को न केवल दलित समुदाय को बल्कि शेष समाज को भी समझने की जरूरत है। बाबा साहब का विचार समाज को बदलने का विचार है। समाज के भीतर समता, समानता और बन्धुत्व की भावना को स्थापित करना है। व्यवस्था से संबंधित बौद्धिक चिंतन पर मंथन करने की जरूरत है। भारतीय संदर्भ में हम जाति से अलग वर्ग की अवधारणा पर बात नहीं कर सकते हैं। अम्बेडकर का हस्तक्षेप सांस्कृतिक और राजनैतिक क्षेत्रों में जबरदस्त रहा है। उन्होंने बौद्धिक हलकों में अपनी क्रांतिकारी उपस्थित दर्ज की है। वे सामाजिक परिवर्तन की आस और उम्मीद में लगातार सक्रिय रहकर ब्राह्मणवाद को चुनौती देते रहे। इन्होंने दलित समाज के संर्घष को बौद्धिक दुनिया में मजबूती से रखा। इसलिए डॉ. अम्बेडकर जैसे जुझारू और चिंतनशील व्यक्तित्व को 'ऑर्गेनिक इंटेलेक्चुअल' के रूप में भी देखना समझना जरूरी है। बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने न सिर्फ जाति व्यवस्था, राजनीति और आर्थिक व्यवस्था को चुनौती दी, बल्कि उन्होंने जाति व्यवस्था पर आधारित सांस्कृतिक आधिपत्य पर भी सवाल उठाया। यह शोध आलेख एक क्रांतिकारी बुद्धिजीवी के रूप में अम्बेडकर के बौद्धिक चिंतन में भारतीय जाति–व्यवस्था की आलोचनात्मक पड़ताल करने का प्रयास है।

बीज शब्द

बौद्धिक, ब्राह्मणवाद, उत्पीड़न, आधिपत्य, जाति–व्यवस्था, सांस्कृतिक–वर्चस्व, ऑर्गेनिक इंटेलेक्चुअल।

प्रस्तावना

डॉ. अम्बेडकर भारत की जाति प्रथा जैसे जटिल विषय से अपनी पूरी मेघा के साथ जूझे हैं। उन्होंने कहा है कि "मेरे से पहले कई चिंतकों ने जाति की गुत्थी को सुलझाने पर चिंतन किया है। किंतु यह विडंबना है कि यह गुत्थी अभी तक नहीं सुलझी एवं इसका रहस्य आज तक परिभाषित नहीं हुआ है और जनता को इस संबंध में कम जानकारी है। मैं जाति जैसे ढाँचे की जटिलताओं को लेकर सचेत हूँ और मैं इतना नाउम्मीद भी नहीं हूँ कि यह कह सकूँ कि यह गुत्थी अगम, अज्ञेय है, क्योंकि मेरा भरोसा है कि इसे जाना और समझा जा सकता है। जातिवाद सैद्धांतिक और व्यवहारिक रूप से एक विकराल समस्या है।"[1] जाति की इसी विकराल समस्या से वे जीवन भर जूझते रहे और स्वाधीनता आंदोलन के दिनों में इस समस्या से निकली समस्याओं की

चुनौतियों का डटकर मुकाबला करते रहे। अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था की सांस्कृतिक, वैचारिक और राजनीतिक नींव को हिला दिया और हर किस्म की असमानता, अन्याय और गुलामी का विरोध किया। उन्होंने शासक वर्गों के एकाधिपत्य का मुकाबला करने के लिए दलित विमर्श, दलित तत्त्वमीमांसा और दलित सौन्दर्यशास्त्र के विचार को फिर से परिभाषित किया। उनके विवेकपूर्ण और राजनैतिक हस्तक्षेप ने जाति के सांस्कृतिक वर्चस्व को चुनौती दी। संपूर्ण वर्ण–व्यवस्था पर अम्बेडकर का चिंतन चोट करता है। यह चोट इसलिए भी ज्यादा दुखती है कि इस व्यवस्था का गहरा अनुभव अम्बेडकर को स्वयं था । अम्बेडकर के जाति प्रथा संबंधी विचारों ने भारतीय बुद्धिजीवियों, राजनीतिक लोगों और सामाजिक चिंतन से जुड़े व्यक्तियों को कई तरह से न केवल आंदोलित किया है अपितु नए सिरे से सोचने की दिशा–दृष्टि भी दी है। उनका चिंतन व्यवस्था में मौजूद अमानवीयकरण के बरक्स इंसानियत के अहसास को बचाए रखने की वकालत करता है। उन्होंने जातिवाद के खिलाफ दलितों को लगातार संगठित और सावधान करके संघर्ष की मुहिम चलाई। जाति–प्रथा का वज्र ढाँचा ऐसा था कि सामाजिक परिवर्तन की आँधी उसके ऊपर से निकल जाती थी और वह जस का तस रहता था। जाति प्रथा के जन्मना रूप ने द्विज और अद्विज संस्कृति को पोषित किया। अम्बेडकर ने जातिवाद की सामाजिक संरचना, जाति प्रथा की उत्पत्ति तथा जाति–प्रथा के विकास के आंतरिक सूत्रों, आंतरिक उपनिवेशवाद को स्पष्ट करने के लिए गहन अनुसंधान किया। उनका यह कार्य आज हमारी आँखें खोलने वाला है।

अम्बेडकर का चिंतन सामाजिक क्रांति के द्वार जाति व्यवस्था को जड़ से उखाड़ फेंकना है। इस समतामूलक समाज में व्यक्ति विकास को पूरा अवसर मिले। डॉ. अम्बेडकर संवैधानिक और लोकतांत्रिक ढाँचे पर ज्यादा चिंतन–मनन करते रहे। आर्थिक मसलों पर भी उन्होंने मंथन किया। वे दलितों और पिछड़ों की आर्थिक स्थिति के सही जानकार थे और खूब भीतर तक समझते थे कि इन जातियों का सामाजिक सम्मान क्यों नहीं है, क्योंकि इनके पास धन–दौलत की कमी है, और कैसे ये मजदूर–किसान वर्ग, शिल्पकार वर्ग में रहकर यातना झेलते रहते हैं। इन जातियों के पास काम करने का हुनर है, पर इस हुनर की कद्र नहीं है। ऐसी स्थिति के कारण अम्बेडकर अच्छी तरह समझते और जानते थे कि उन्हें सामाजिक, राजनीतिक अन्याय के साथ आर्थिक अन्याय के मोर्चे पर भी एक जबरदस्त लड़ाई लड़नी होगी ।एक खास ढंग से उन्होंने यह लड़ाई लड़ी भी, तभी तो वे राजनैतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र में बदलने की तैयारी करते हैं। उनका पूरा प्रयास संविधान की व्यवस्था के अंतर्गत ही समाजवादी स्वरूप अपनाने का था । वह मानते हैं कि हमें भारतीय होने की व्यापक मानवतावादी जमीन पर सोचने की हर कीमत पर आदत डालनी चाहिए। उनके शब्द हैं, ‘मुझे अच्छा नहीं लगता जब कुछ लोग कहते हैं कि हम पहले भारतीय हैं और बाद में हिन्दू अथवा मुसलमान। मुझे यह स्वीकार नहीं हैं। धर्म, संस्कृति, भाषा आदि की प्रतिस्पर्धा निष्ठा के रहते हुए भारतीयता के प्रति निष्ठा नहीं पनप सकती। मैं चाहता हूँ कि लोग पहले भी भारतीय हों और अंत तक भारतीय रहें, भारतीय के अलावा कुछ नहीं”।[2] हर बार उन्होंने अपना यह संकल्प दुहराया कि मेरे अपने हित और देश के हित के साथ टकराव होगा तो मैं देश को तरजीह दूँगा। इसका मतलब है कि वे भारत से प्रेम करते हैं और एक राष्ट्रवादी की सच्ची निष्ठा से उनकी मानसिकता का निर्माण हुआ है। अपने सशक्त राष्ट्र की कल्पना में उन्होंने माना कि भारतीय समाज से जातिवादी व्यवस्था खत्म होनी चाहिए। ”उनके राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में समता, समानता और बन्धुत्व की भावना मौजूद है। बाबासाहेब अम्बेडकर ने समता, समानता और बंधुत्व की अवधारणा को स्पष्ट किया है। समानता बिना भाईचारे के संभव नहीं है।[3] दरअसल, बन्धुत्व व्यक्तियों के बीच भाईचारे का नाम ही है। उनके जीवन–भर के चिंतन का लक्ष्य था जातिवाद

की जड़ों में मट्ठा डालकर उसे मिटाने की तैयारी करना।

अम्बेडकर के पास वह विराट और उदात्त चिंतन भूमि हैं जहां वे कबीर, रविदास और महात्मा ज्योतिबा फूले से मिल जाते हैं। जाति उन्मूलन का पूरी भारतीय संत परम्परा समर्थन करती है और उसके लिए सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण बनाती है। आजादी के आन्दोलन के लिए डॉ. अम्बेडकर का एक महत्वपूर्ण नारा था–'जाति–विहीन समाज की स्थापना के बिना स्वराज–प्राप्ति का कोई महत्व नहीं।[4] उनका यह वाक्य कैलेंडरों में छपकर बिका है। उनका मानना था कि जाति–व्यवस्था पर आधारित समाज, जिसका मूल चरित्र ही भेदभाव है, मैं कमजोर वर्गों के उत्थान की जिम्मेदारी चंद उच्च जाति के लोगों के ऊपर नहीं छोड़ी जा सकती । उनका 'जाति का उन्मूलन' मुक्ति के संदर्भ में "भारतीय समाज व्यवस्था के लिए अत्यंत ही महत्वपूर्ण प्रलेख है। गौरतलब है कि न तो मार्क्स का और न ही माओत्सेतुंग का समाज जाति–व्यवस्था पर आधारित था। इसलिए जाति–व्यवस्था से मुक्ति का चिंतन भी उन्होंने नहीं किया। परन्तु अम्बेडकर का समाज जाति व्यवस्था पर आधारित था, इसलिए उन्होंने इस व्यवस्था से मुक्ति का चिंतन भी किया।[5] वे एक समतामूलक और न्यायपूर्ण समाज का स्वप्न देखते हैं जिसमें सभी भारतीय स्वस्थ, शिक्षित, सुखी, सुन्दर और शोषणमुक्त हों।

मध्यकाल में जाति व्यवस्था और संत विचारक–मध्यकाल में कबीर और रविदास जैसे वंचित जाति के भक्त संतों ने ब्राहमणवाद के आधिपत्य को चुनौती दी। ऊँची जातियाँ आज भी इनके प्रति घृणा का भाव रखती है। यहाँ यह उल्लेख करना जरूरी है कि किसी भी समाज में अंतर्विरोध केवल आर्थिक कारकों से ही नहीं बल्कि गैर–वर्गीय निर्धारकों द्वारा भी आकार लेते हैं। भारतीय संदर्भ में पिछले तीन हजार वर्षों से भौतिक संबंधों के स्तर पर संघर्षों और अंतर्विरोधों को संचालित करने में जाति मुख्य औजार रही है और वैचारिक स्तर पर ब्राह्मणवाद को केन्द्रीय आकार देने वाली शक्ति भी रही है। गैर–ब्राह्मणवादी वैचारिक चिंतन जैसे कि बौद्ध धर्म, इस्लाम और अन्य वैचारिक परंपराओं को अपने आप को स्थापित करने के लिए कड़े संघर्ष करने पड़े। ब्राह्मणवादी संरचना के भीतर से ब्राह्मणवाद को चुनौती देना सबाल्टर्न कवियों, विचारकों और बुद्धिजीवियों के लिए वास्तव में बेहद कठिन काम था । इनके बौद्धिक चिंतन से पता चलता है कि उन्होंने अपने समय के सभी वर्चस्ववादी ढाँचों को खारिज कर दिया। भक्ति आन्दोलन जात–पाँत विरोधी तेवर लिए आया। इतना ही नहीं, इसने हिन्दू–मुसलमान दिलों को भी जोड़ने का अपूर्व कार्य भी किया। यह इतना विराट सांस्कृतिक आन्दोलन था कि पूरा देश भक्ति – सागर में निमग्न होता चला गया।कबीर,रविदास और रैदास भी इसमें निमग्न हुए । इस भक्ति आन्दोलन के पूरे इतिहास को डॉ. अम्बेडकर ने ध्यान से समझा और खोजा है। इस आन्दोलन की पूरी स्थिति पर बाबा साहेब ने यह मार्मिक टिप्पणी की है– संत आए, महात्मा आए। उनके आने से कुछ धूल तो उड़ी। परंतु आदमी का स्तर ऊँचा नहीं हो सका। भक्ति आन्दोलन की सुधारवादी हवा के थमते ही सामन्तवाद का विकृत चेहरा उभरा। इसी सामंतवाद ने दलितों को तबाही की ओर धकेलकर दम लिया।

उन्नीसवी सदी में जाति व्यवस्था और महात्मा फूले – उन्नीसवी शताब्दी में वर्चवादी ढाँचे के खिलाफ स्वर तेज हो गए । उपनिवेशवाद के प्रगतिशील चरण ने दलित सशक्तिकरण के लिए सुधारात्मक कदम उठाए। सन् 1827 में ज्योतिबा फूले ने ब्राह्मणवाद के प्रभुत्व से शुद्रों और अतिशुद्रों को मुक्त करने का संकल्प लिया। सन् 1873 में महात्मा फुले ने अपनी तीखी विवादित पुस्तक 'गुलामगिरी' प्रकाशित की। यह पुस्तक जाति का पौराणिक और ऐतिहासिक विश्लेषण है।उन्होंने आर्यों को शुद्रों–अतिशुद्रों की गुलामी के लिए जिम्मेदार ठहराया, जो यहां सदियों से स्वतंत्र रह रहे थे। लेकिन आर्यों के आगमन से उनकी सभ्यता तहस–नहस हो गई। पहली बार इतिहास का एक गैर ब्राह्मणवादी बौद्धिक पाठ सामने आया। यह पुस्तक गैर ब्राह्मणवादी

व्याख्या पर आधारित है और उसके प्रभुत्व पर हमला करती है। फुले के मत का मूल आधार "आर्य प्रजाति सिद्धांत था जो उनके समय में जातिवाद और भारतीय समाज का प्रमुख प्राख्यापक था।[6] उन्होंने ब्राह्मणों को आर्य आक्रमणकारियों के वंशज के रूप में चित्रित किया, जिन्होंने यहां के बाशिंदों की शक्ति, संपत्ति, भूमि और अन्य संसाधनों को हड़प लिया। इस प्रकार इन्होंने सभी निचली जातियों की क्षत्रिय पहचान पर जोर दिया और नए नजरिए से हिन्दू धर्म में प्रचलित मुख्य कहानियों और प्रतीकों की पुर्नव्याख्या भी की।

भक्ति काल के संतों को इतिहास का बोध नहीं हो सका क्योंकि वे एक आध्यात्मिक–धार्मिक ढाँचे के भीतर काम करते थे। परन्तु उन्नीसवी शताब्दी में सबाल्टर्न विचारकों, समाज सुधारकों और बुद्धिजीवियों को इतिहास का बोध हुआ और वंचित लोगों के लिए जागरूकता का काम करना शुरू किया। दक्षिण भारत का तमिलनाडु जन–जागृति और जातिवाद पर बहस का एक महत्वपूर्ण स्थल बन चुका था।इसके साथ ही,तमिल दलित आंदोलन ने प्राचीन तमिलों के साथ नहीं बल्कि बौद्ध संतों और विचारकों के साथ तादात्म्य स्थापित करके एक बड़ी चुनौती भी पेश की। तमिलनाडु में ई.वी. रामास्वामी पेरियार जाति–मुक्ति की एक शक्तिशाली आवाज बन गये और अंबेडकर से पहले, बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित करने वाली आवाज भी बने। इसलिए, यह माना जा सकता है कि बहुजन कवियों, बुद्धिजीवियों, विचारकों और दार्शनिकों ने विभिन्न तरीकों और अभिव्यक्तियों का उपयोग करके वर्चस्वकारी जातियों के आधिपत्य का खुलकर विरोध किया। अम्बेडकर ने उत्पीड़ित समुदायों के मानवाधिकार की रक्षा और उनके लिए व्यवस्थित रूप से वैचारिक संर्घष किया। वे मानवीय अधिकारों से वंचित किए जाने के खिलाफ बौद्धिक लड़ाई लड़ते हैं। इन वजहों से आज अम्बेडकर को एक 'ऑर्गेनिक इंटेलेक्चुअल' के रूप में व्याख्यायित करते हुए उनके वैचारिक एजेंडे पर ध्यान देना चाहिए। समाजशास्त्रियों पर टिप्पणी करते हुए उन्होंने कहा– "यदि आन्दोलन से पहले जातिवाद पर ध्यान नहीं दिया तो उन्हें क्रांति के बाद जातिवाद पर ध्यान देने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। यह केवल इस बात को कहने का एक दूसरा तरीका है कि आप किसी भी दिशा में जाएँ, जाति नाम का राक्षस आपका रास्ता रोके खड़ा होगा। जब तक आप इस राक्षस को नहीं मार देंगे, तब तक आप न तो राजनैतिक बदलाव कर सकते हैं और न ही आर्थिक सुधार।[7] जाहिर सी बात है जाति के प्रश्न को हल किए बिना कोई क्रांति नहीं हो सकती है।

निष्कर्ष

अम्बेडकर सामाजिक सुधार की आवश्यकता से ज्यादा सामाजिक क्रांति के पक्षधर हैं। जातिवाद का दानव जब तक नहीं मरता, तब तक आर्थिक व राजनीतिक परिवर्तन की बात सपना ही रहेगी। क्योंकि जातिवाद, वर्ण–व्यवस्था न तो श्रम विभाजन पर आधारित है–न प्रकृति प्रदत्त है। स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना जीवन मूल्यों में मूलभूत परिवर्तन लाने पर ही संभव है। अपनी क्रांतिकारी सामाजिक सक्रियता और ज्ञानमीमांसीय तर्कों के माध्यम से उन्होंने जाति के सांस्कृतिक आधिपत्य को चुनौती दी। उन्होंने दलित समाज की व्यापक चिंताओं को संबोधित किया और अपनी पूरी राजनीति को उत्पीड़ित वर्गों के सवालों के इर्द–गिर्द रखा। मुक्ति के अपने संघर्ष और सपनों में उन्होंने मजदूरों के मुद्दे,महिलाओं के मुद्दे, किसानों के मुद्दे, दलित मुद्दे और आदिवासियों की समस्याओं को उठाया। अम्बेडकर की सांस्कृतिक और राजनीतिक संघर्ष में सकारात्मक भागीदारी और दलित जनता की मुक्ति के लिए उनकी विरान जिन्दगी में थोड़ा सा उजाला, थोड़े से रंग लाने की बौद्धिक कोशिश उन्हें 'ऑर्गेनिक इंटेलेक्चुअल' बनाता है। वे अमानवीयता के अंधेरे के खिलाफ संर्घष चेतना लालटेन की लौ तेज करते हैं।

– डॉ. बन्ना राम मीना
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
पीजीडीएवी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली. 65 मोबाइल : 9910272879

संदर्भ :

1. बाबा साहब डॉ.अम्बेडकर : संपूर्ण वाड्मय, खंड–1, पृष्ठ, 17
2. बाबा साहब डॉ.अम्बेडकर : राइटिंग्स एंड स्पीचिस, खंड–2, पृष्ठ, 195
3. बाबा साहब डॉ.अम्बेडकर सम्पूर्ण वाड्.मय, खण्ड–17, पृष्ठ 503.
4. दलित चिंतन का विकास– डॉ. धर्मवीर, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ–152.
5. हिन्दी दलित साहित्य – मोहनदास नैमिशराय, साहित्य अकादमी, पृष्ठ–20.
6. जाति की समझ – गेल ओम्वेट, ओरिएंट ब्लैकस्वॉन, पृष्ठ–26.
7. जाति की समझ–गेल ओम्वेट, ओरिएंट ब्लैकस्वॉन, पृष्ठ–57.

संजना कौल की कहानी 'काठ की मछलियाँ' में मल्लाहों की जीवन त्रासदी

– डॉ. मनीषा

भूमिका :– संजना कौल एक संवेदनशील लेखिका है। यह समाज के कमजोर वर्ग की दयनीय स्थिति को सुधारना चाहती हैं। 'काठ की मछलियां' कहानी में इन्होंने मानव जीवन से जुड़े अनेक पहलुओं को चित्रित किया है। जिससे पता चलता है कि समाज के निम्न वर्ग के साथ पशुओं से भी बुरा व्यवहार किया जाता है। लेखिका ने अपनी कहानी काठ की मछलियां में मल्लाहों की जीवन त्रासदी का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। मल्लाहों का जीवन संघर्ष एवं तनाव से भरा हुआ है। उन्हें अनेक प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। मल्लाह जाति के लोग बहुत ही भद्दी जिंदगी जीने को मजबूर हैं। ये नावों में रहते हैं, इनकी नाव नदी के किनारे खूंटे से बंधी रहती हैं। इन्हें मौसम की मार झेलनी पड़तीहै। झेलम के मट मैले पानी में खतरों और अस्थिरताओं के बीच खड़े उनके लकड़ी के घर जो अंदर ही अंदर लकड़ी के सड. जाने से कभी भी टूट सकते हैं, और किसी भी मल्लाह परिवार का कब्रिस्तान बन सकते हैं।[1] नदी में बाढ़ या बारिश के पानी से इनका घर उजाड़ सकता है। कवियत्री ने मल्लाहों के जीवन की ऐसी ही दुर्दशा का वर्णन अपनी प्रस्तुत कहानी में किया है।

विषय वस्तु : – कश्मीर की कड़कड़ाती हुई ठंड मल्लाहों को झेलनी पड़ती है। मल्लाह को दिन–रात किसी भी समय आराम नहीं मिलता। चौबीस घंटे पानी में रहनेवाली मल्लाहों की बदवान जाति के लिए तमाम खतरे थे। बाढ़ के पानी में नाव के खुलकर बह जाने का खतरा... ।[2] इनके पास नावों के अलावा कुछ भी नहीं है। यह बेचारे अपना जीवन नावों के द्वारा ही व्यतीत करते हैं। चाहे सर्दी हो या गर्मी यह नावों में ही रहते हैं इनके छोटे–छोटे बच्चे कभी ठंड में ठिठुरते हैं, तो कभी गर्मी की आग में तपते हैं। जायदाद के नाम पर नाव में सड़ी हुई लकड़ियां हैं, मेरे पास[3] मौत किसी भी समय इनको गले लगा सकती हैं। नदी में बाढ़ के द्वारा या लहरों में उछाल के कारण या फिर नाव में छिद्र आदि होने पर नाव में पानी भर जाता है। जिसको नाव में पड़े बेकार चिथड़ों के द्वारा उन छेदों को भरने की कोशिश करते हैं। क्योंकि नाव के डूबने पर उनके बच्चे, मल्लाह परिवार और उनकी जरूरत का सामान सब कुछ पानी में डूब जाता है। चीखते हुए उसे झकझोर डाला या अल्लाह! यह कैसी नींद है तुम्हारी! उठो नाव में पानी भर रहा है।[4] मल्लाह दिन भर शारीरिक श्रम करते हैं यह दिन–रात पानी में रहते हैं। वह भी माटी से भरपूर गंदे पानी में इनका जीवन दुखों से भरा होता है। सर्दियों के बादलों की तरह निराशा उसकी पूरी आत्मा को घेर गई कि नाव की सड़ रही लकड़ियों की तरह उसकी भरी पूरी जवानी सड़क पर नष्ट हो जाएगी।[5] मल्लाह अपार दुखों के कारण अपनी आत्मा को टूटा हुआ महसूस करता है। मल्लाह भाग्यवादी होते हैं। प्राकृतिक आपदा आने पर वे भगवान के सामने नतमस्तक हो जाते हैं अपने किए गए कर्मों की माफी मांगते हैं। मल्लाह शिक्षा के अभाव में परस्पर लड़ते–झगड़ते रहते हैं वे छोटी–छोटी बातों पर मारपीट करते हैं एवं गाली –गलौज भी करते हैं

उनके बच्चे भी बड़ों को देखकर ऐसा ही व्यवहार करते हैं। मल्लाहों को लड़ते– झगड़ते मारपीट करते देख माँ बहन की गालियां बकते हुए दिखते हैं।[6] इनका जीवन घुटन और असुरक्षा से भरा हुआ होता है इनके भाग्य में दुख ही दुख है। इनकी जिंदगी कठोर है। ये अभिशप्त जीवन जीते हैं। इनकी जिंदगी खतरे से भरपूर है लेकिन दुख को सहना तो इनकी आदत–सी हो गई है क्योंकि यह सदा ही संकटों से घिरे रहते हैं। इसी कारण झगड़ालू प्रवृत्ति व कटुवाणी के होते हैं। हम मल्लाह हैं हमारे पास तमाम गालियां और सिहरा देने वाले को कोसते हैं। सदियों की अशिक्षा और गरीबी है। मेरी जाति के लोग बहुत चिड़चिड़े और झगड़ालू हैं।[7]

मल्लाह दुखों एवं कष्टों के कारण मानसिक रूप से ठीक नहीं रह पाते इनको अनेक प्रकार के रोग लग जाते हैं। क्योंकि इनका निवास स्थान किनारों की नाव पर है जहाँ गंदगी, गंदा पानी होता है। जिससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पानी के अंदर तरह–तरह के जीव होते हैं अज्ञानता के कारण सफाई के अभाव में बीमारियां फैलती हैं। इन सब कारणों से मल्लाह मानसिक रूप से विकृत अवस्था में होते हैं। इसमें हमारा क्या कसूर है जो लकड़ी के बंद दबड़ो में चौबीस घंटे डूबने का खतरा लिए हुए जिंदा रहते हैं। वह अपनी इस खीज को बाहर कैसे निकालेंगे।[8] बाढ़ के समय नदी अपने साथ कूड़ा–करकट पशु–पक्षी आदि बहाकर लाती है, और किनारे पर छोड़ देती है मानव भी पानी में अनेक प्रकार की सामग्री डालकर उसे गंदा कर देता है। कितने पशुओं के मुर्दा जिस्म बहते रहते हैं। पानी में दिन का तनाव और रात का जागरण![9] बाढ़ में जान–माल की हानि होती है। नदियाँ गंदगी बहाकर लाती हैं और मल्लाहों के बसेरे में छोड़ देती हैं मल्लाह बार–बार यातना में पिसते रहते हैं। दुख तो इनके जीवन भर का साथी ही बन जाता है। गंदगी की यातना के साथ–साथ यह अपनी बहू–बेटियों पर बने खतरे से भी जूझते हैं। यह ऐसे स्थान पर रहते हैं, जहाँ पर आवारा किस्म के लड़के शराबी व नशाखोरों का आना–जाना लगा रहता है। ये मल्लाहों की बहू–बेटियों पर बुरी नजर रखते हैं। तंग गलियों में शोहदों पर नशेड़ियों का आना–जाना लगा रहता था।[10] घर के काम के वास्ते जब लड़की नाव से बाहर जाती है तो वहाँ खड़े आवारा लड़के उसे उठाकर ले जाते हैं। उसकी इज्जत से खिलवाड़ करना चाहते हैं। वह गली के नल के पास पानी भर रही थी तभी तीन लड़के पास वाली तंग गली से निकल कर आए और उसे पकड़कर सामने के खाली मकान की तरफ ले जाने लगे।[11] किनारे पर घूमने वाले नशेड़ी व आवारा लड़के इन लड़कियों को अपनी जायदाद समझते हैं। उनका शोषण करते हैं। लेकिन परिवार वाले इन लड़कों को कुछ न कहकर अपनी बेटियों को ही प्रताड़ित करते हैं। उनके साथ पशुओं के समान व्यवहार करते हैं। अब तक कई जगह लड़कियाँ बाप व भाइयों के हाथों बुरी तरह पिट चुकी थी।[12] मल्लाहों की स्त्रियों की स्थिति अत्यंत दयनीय है।

कॉलेज में पढ़ने वाले मल्लाहों के लड़कों के साथ भी पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जाता है। उसे नीची जाति का कहकर व्यंग्य किया जाता है। उसके रहन–सहन उनके घर की औरतों का मजाक बनाया जाता है मल्लाह जाति में बहुत कम बच्चे पढ़ते हैं, परंतु पढ़ने वालों का अन्य विद्यार्थियों द्वारा मजाक उड़ाया जाता है। उसके साथ अभद्र व्यवहार किया जाता है। कमजोर तबके के साथ हर दौर में ऐसा ही होता है।[13] समाज में निम्न वर्ग को सदैव हेय दृष्टि से ही देखा जाता है। सदा से ही गरीब अमीरों के अत्याचार सहते हुए आए हैं। कॉलेज में पढ़ने वाला मुख्तियार समझ गया कि आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के साथ सदैव पक्षपातपूर्ण व्यवहार किया जाता है। इसी तरह किनारे की सीढ़ियों के पास मकान में रहनेवाले लोग भी उनके साथ बुरा बर्ताव करत हैं। वह स्वयं को उच्च श्रेणी के मुसलमान समझते हैं। इनके परिवार के बेटे मल्लाहों की बेटियों पर अपनी बुरी नजर रखते हैं। मल्लाहों की बेटियों पर लांछन लगाते हैं। मुख्तार नामक विद्यार्थी पर कटाक्ष करते हैं। सिर्फ गालियां ही नहीं सुनी, मैंने तुम्हारी औरतों की कई नौटंकियां भी देखी है। उसने मुस्कुराकर आँख मार दी।[14] हाजी साहब का बेटा जब महमूद मल्लाह की बहन पर आरोप लगाता है, तो हाजी साहब अपने बेटे को समझाने की बजाय महमूद को उस

किनारे से नाम हटाने का आदेश देता है। मुख्तार मल्लाह जब अपने दोस्त महमूद की तरफदारी करता है तो उसकी नाव भी वहाँ से हटवा दी जाती है। तथा उसे गाली देने लगा तेरी इतनी हिम्मत तू हमारी बात का विरोध करें वह मल्लाह के साथ मारपीट करता है। साला मल्लाह आज तुझमें इतनी कुवत भर गई कि अब्बाजान से जबान दराजी करता है। देखना उस हरामजादे के साथ तेरी नाव भी यहाँ से निकलवा देता हूं।[15] यदि मुख्तार चाहता तो जवाब दे सकता था लेकिन वह समझ गया था कि पैसे की ताकत के आगे वह निस्सहाय और अशक्त है। इसलिए वह अपमान का घूंट पी कर रह गया।

स्थानांतरण के बाद भी मल्लाहों की जाति– पाति के भेदभाव एवं ऊँच–नीच की समस्याओं से गुजरना पड़ता है। उनकी नाव के पास किनारे की सीढ़ियों वाले मकान में कोई इम्तियाज अली रहते हैं। आज मुख्तार के पिता के पास बात करने के लिए नाव में आए हैं, मैंने उनसे चाय पीने के लिए आग्रह किया लेकिन उन्होंने नहीं पी उनकी बेटी उन्हें बुलाने आई और वे चले गए। मुख्तार मल्लाह की पत्नी जब पानी भरने जाती है तो इम्तियाज अली की बेटी अपनी सखी से बात करते हुए कहती है कि हम इन नीच जाति वालों के घर चाय नहीं पीते। यह सब हमारी शान के खिलाफ है। हम मल्लाहओं के घर चाय नहीं पीते हमारा खानदान ऊँचे मुसलमानों का खानदान है।[16] बेचारी मल्लहिन को समझ नहीं आ रहा था कि हम कौन से हिंदू हैं, कि हमारे घर चाय नहीं पी रहे हम भी तो मुसलमान ही हैं। इस प्रकार मल्लाहों को मानसिक रूप से भी प्रताड़ित किया जाता है। नदी के किनारे पर बंधी नावों में बसने वाले बेबस, लाचार मल्लाहों को लोग पैर की जूती के समान समझते हैं। उन्हें कोई भी आदर– सत्कार व सम्मान नहीं देता। सभी उनसे अभद्र और अमानवीय व्यवहार करते हैं। जैसे कि वह हाड़ मांस से बने इंसान न होकर पत्थर हो। किनारों पर सैर करने वाले लोगों के लिए मल्लाह एक अजूबे की तरह है। वे इन्हें नीची निगाहों से देखते हैं। किनारों के मकानों में रहने वालों के लिए मल्लाहों की अजूबे की सी स्थिति है। मल्लाह ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे लोगों के देखने के लिए कोई नजारा है। वह कितने दुखों से पीड़ित है। इस बात की परवाह कोई नहीं करता। उनके साथ सहानुभूति किसी को भी नहीं लेकिन उनका सब मजाक अवश्य बनाते हैं। वह इंसान होकर भी पशु तुल्य जीवन जीने के लिए विवश है।

निष्कर्ष :– लेखिका ने मल्लाहों के दीन–हीन जीवन का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है। मल्लाहों से जुड़ी छोटी से छोटी समस्या पर भी गहराई से विचार किया है। मल्लाह बेचारे बहुत ही भद्दी जिंदगी जीने को मजबूर हैं। ये अनेक मानसिक यातनाएं और दुर्गतियों को सहते हैं। इसके साथ ही प्राकृतिक आपदा और इंसानों की बेरुखी इन्हें कम परेशान नहीं करती। इनका सारा जीवन लगातार संघर्ष में व्यतीत होता है। ये यातना के चक्कर में पिसते रहते हैं, और अभिशप्त जीवन व्यतीत करते हैं। प्रस्तुत कहानी में मल्लाहों के माध्यम से लेखिका ने वर्तमान समय में निम्नवर्ग की जीवंत समस्या को उजागर किया है। वर्तमान समय में भी निम्न वर्ग की स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई है। शिक्षा के कारण समाज की मानसिकता में परिवर्तन अवश्य आया है परंतु इसका प्रतिशत बहुत कम है। लेखिका ने प्रस्तुत कहानी में महिलाओं की जिंदगी का बहुत हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।

– डॉ. मनीषा
रोहतक – 124001 (हरियाणा)
दूरभाष नंबर– 8059635308

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. काठ के मछलियां, पृष्ठ 70
2. काठ की मछलियां, पृष्ठ 36
3. काठ की मछलियां, पृष्ठ 69
4. काठ की मछलियां, पृष्ठ 69
5. काठ की मछलियां, पृष्ठ 73
6. काठ की मछलियां, पृष्ठ 36
7. काठ की मछलियां, पृष्ठ 68
8. काठ की मछलियां, पृष्ठ 68
9. काठ की मछलियां, पृष्ठ 75
10. काठ की मछलियां, पृष्ठ 37
11. काठ की मछलियां, पृष्ठ 37
12. काठ की मछलियां, पृष्ठ 66
13. काठ की मछलियां, पृष्ठ 69
14. काठ की मछलियां, पृष्ठ 67
15. काठ की मछलियां, पृष्ठ 72
16. काठ की मछलियां, पृष्ठ 74

मासिक पत्रिका "आश्वस्त" के स्वामित्व एवं अन्य विवरण
फार्म –4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थल	: 'आश्वस्त' 20, बागपुरा, सांवेर रोड उज्जैन (म.प्र.)
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक	: पिंकी सत्यप्रेमी
	नागरिकता	: भारतीय
	पता	: 'आश्वस्त' 20, बागपुरा, सांवेर रोड उज्जैन (म.प्र.)
4.	प्रकाशक	: पिंकी सत्यप्रेमी
	पता	: उपरोक्तानुसार
5.	संपादक	: डॉ. तारा परमार
	नागरिकता	: भारतीय
	पता	: 9–बी, इन्द्रपुरी, सेठीनगर, उज्जैन
6.	पत्रिका का स्वामित्व	: भारती दलित साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश "आश्वस्त" 20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन

उस व्यक्ति संस्था के नाम जो समाचार–पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत के साझेदार या हिस्सेदार हो ।

मैं पिंकी सत्यप्रेमी एतद् द्वारा घोषित करती हूं कि उपरोक्त समस्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है।

हस्ताक्षर
पिंकी सत्यप्रेमी
प्रकाशक

मार्च 2023

Negotiating Digital Space : A Study of New media platforms by Dalits

- Dr. Krishna Sankar Kusuma - Saroj Kumar

Abstract

At present, many Dalits are using new media platforms to express their views. They are using YouTube, news websites, and social media platforms like Facebook and Twitter. Through this, they are not only sharing their views but are protesting against their oppression. The study aims to explore how Dalits use the new media. What kind of sentiment is coming out of it and what is its nature? Further more the perils of new media discourse on the Dalit issues. Hence, the aim of this paper is to examine the use of new media platforms by Dalits in the present times and outline its possibilities and challenges.

Key words : New media, Dalits, YouTube, Social media, News websites, Digital platforms

Introduction:

Dalits are one of the most under represented groups in India, and they have also been under represented in the media there for a long time. Dalits are one of the most under represented groups in India, the so-called, and they have also been under represented in the media there for a long time. They have very little representation in the so-called mainstream media (Jeffrey, 2000; OXFAM, 2019). However, they have always tried to find alternate ways to express themselves. This is true for contemporary times. With the advent of new media technologies, they are trying to articulate their views and issues through it (Nayar, 2011; Kumar, 2013; Thakur, 2019). They are using different new media platforms and practices. This includes online blogs as well as social media platforms. They are using their social media pages and profiles to connect with each other. Besides common Dalit people, activists, leaders to singers, and artists have started their social media pages to connect with their

followers. Dalits are also creating their own online blogs, news websites, and YouTube channels. Websites and YouTube channels like 'Dalit Camera', 'Dalit Dastak', 'Roundtable India' and 'Mooknayak',' and 'The Activist' are some of the few leading examples of such a trend among Dalits. Hence, it is interesting to see their practices and expressions.

New media can be a powerful tool for Dalits to raise awareness and promote their causes. They can use new media to share their stories and experiences with a wider audience. In this process, new media can bring together Dalits from different parts of the country, and the world, who share common interests or experiences. Online forums and social media groups can be used to build supportive networks and create a sense of belonging among Dalits. They can use new media to challenge negative stereotypes and misconceptions about the community. Beside resistance against the atrocities, by sharing positive and diverse images and stories, Dalits can help to break down barriers and promote understanding and acceptance. Thus, new media can be a powerful tool for advocating for social justice and promoting change. Marginalized communities can use social media to raise awareness of issues, mobilize support, and hold those in power accountable. Thus, new media has the potential to empower Dalits by giving them a voice and a platform to share their experiences and connect with others.

Mobilization of Dalits through new media

Online mobilization has been one of the major phenomena since the advent of internet-based media platforms. In India, Dalits are also finding their place in this online trend. Hence, Dalits are not just articulating their views; they are mobilizing online through these new media platforms. Recent years have witnessed such online mobilization by Dalits. This was visible after the tragic death of Rohith Vemula (2016), a Dalit scholar at University of Hyderabad (Thakur, 2019). Many Dalits from all over India protested against this incident and expressed their concerns and anger online. #Dalitslivematters is one of the common and connecting hashtags used during such events. After the Una atrocities against Dalits in 2016 in Gujarat, this online mobilization was also brought to light. Protesting Dalits in Gujarat uploaded their videos of protests on social media. They also threw carcasses of animals into the government offices as a protest, and videos of this

incident were widely circulated on social media. Those video clips went viral on new media platforms. Some scholars also suggest that social media helped the protest reach a national level. Perhaps this was the first time in the state (Gujarat) that Dalits were uniting and protesting on such a large scale through social media (Shinde, 2016). However, the online protest after the incident was not just limited to the state; it was taking place all over India.

Social media campaigns like #ShoesfortheDM and "show your mustache" are another form of mobilization by Dalits. In August 2019, the district magistrate (DM) of Uttar Pradesh's Ballia district is said to have made fun of a Dalit leader for his expensive shoes and car. When the Dalit leader posted a video alleging this on Facebook, an online campaign started in his support, saying that Dalits are no longer just oppressed and that they can also enjoy good things in life. Hence, through this campaign, Dalits tried to express a new kind of pride (Kumar S., 2021). This pride is also visible during "show your mustache' campaigns. There have been many incidents of Dalits being beaten up by the upper castes for having a mustache. In the age of new media, Dalits are protesting on social media by sharing their photos with mustaches and saying that they too have the right to have a mustache. One such campaign in the country took place in 2017 (Chauhan, 2017). Thus, Dalits in India are also networked with each other with the help of new media technologies, and they are organizing online protests and campaigns for their cause.

Blogs, websites, and YouTube channels are also another form of use of new media by Dalits. Since they are not represented in the so-called mainstream traditional media, they have started circulating news related to their community by starting their own websites and YouTube channels. As mentioned above, channels like Dalit Camera, Dalit Dastak, National Dastak, The Activists, Mooknayak are doing such practices. The stories of Dalits and other marginalized communities are covered prominently by them. Another thing that makes them different is that mainly people from Dalit and other deprived communities work on these channels and websites. The number of such news websites and YouTube channels is growing day by day. Hence, it is an important trend in the new media by Dalits.

Methodology :

The study adopted qualitative descriptive methodologies, which

include thick descriptions and case studies. Keeping the word limit, a summarized version of the analysis is presented in this paper. The study critically reviewed select news media platforms based on Dalit issues, which are mentioned above.

Framework and Expression of online Dalits

From the above analysis and observation, it is clear that Dalits are using new media technologies in different forms and ways. Overall, its framework has these characteristics and elements :

- Social media profiles and pages of Dalits : All kind of Dalit people are making their profiles and pages. These includes common Dalit persons as well as leaders, singers, activists etc. They are connecting with each other and to broader people through this. In this process, a network is formed. Besides common daily activities, these online Dalits used to react also during an event related to the community.
- Websites and YouTube channels: Dalits are making their YouTube channels to express themselves in different ways. Dalit media practitioners are also starting their news websites and channels to cover and circulate stories from the community.
- New kind of expression and pride: They are not only mobilizing and protesting against the atrocities through these new media platforms, but expressing new kinds of pride and sentiments. This is visible in social media campaigns like 'show your mustache' as discussed above.
- Dalits mobilization and protest is not a new phenomenon but its form, scale and circulation is different from earlier offline mobilizations. This happens at a very fast pace and on a large scale and it has been possible only because of the new media. This helps them make any content related to them 'viral'. Hence, 'virality' is the new phenomena in this mobilization. This is also breaking the physical, geographical and language boundaries as Dalits from different regions are connecting with each other easily.

All of these aspects of the new media are not limited to Dalits. This phenomenon is happening all over India and the world with all communities. However, the specific social position of Dalits in Indian society makes it different for them. One other thing that is unique here is their cause. The community, once considered "untouchable" in Indian society, has also made social media a tool in the fight for its own respect and

representation. They are also trying to end their marginalization in the Indian media landscape through this.

Scope and Challenges

Based on the analysis above, it seems that Dalits only use new media to organize and speak out. The proliferation of new media has provided great opportunities for Dalits. Since the traditional mainstream media has historically not given them representation, the new media has also emerged as a hope for them. Unique features of new media like "interactivity", "two-way communication", 'participation', 'remediation' and "virality" make new media technologies more connecting, interactive and rapid (Logan, 2010; Deuze, 2006; Lievrouw, 2011). They help users to participate in the process of meaning making (Deuze, 2006). Users are also somehow able to choose and connect with others of their choice and form their own customized network (Dijck & Poell, 2013). Through these characteristics, new media also provides opportunities for Dalits to connect and express themselves. Social media profiles and pages, websites, and YouTube Channels by Dalits are possible due to the scope provided by new media. Thus, it has provided a space to Dalits to participate and be represented.

However, the new media always keeps changing. This uncertain nature of new media is also a challenge for users. Another limitation is the "digital divide' and Dalits have less access to new media technologies than other privileged communities in the country. Apart from this, the risk of gatekeeping on the part of the corporate and government side also remains in the free use of new media (Kujat, 2016). These are some of the problems Dalits face when using new media, and they should be looked into.

The Dalits want to use the Internet to help them get a democratic voice, but the dominant castes often shut them down with hate speech, fake news, and trolling. The psyche of the dominating castes, who often own capitalists, It is interesting and horrifying to observe several videos of brutally beaten Dalits on social media by the so-called "upper caste". Cases in Rajasthan, Gujarat, Bihar, and Uttarpradesh show that Dalit oppressors are not afraid of being found out. Instead, they seem to be sending the videos to the Dalit community as a threat to stay submissive to them. Anti- dalit groups use mobile phones, Whatsapp, Telegram, and regional-based apps like Share Chat to spread hatred toward dalits. The level of education, 'civilized' and urban or rural, does not prove to rise above the oppressed psyche of caste discrimination. There aren't many options for dalits to voice their concerns

online, and most of them are owned, run, and shared by oppressed castes. However, digital news platforms and social media gave dalits a chance to express their concerns and pushed them to reorganize their minds. Even though there have been some campaigns, the building of the dalit collective has not yet led to mass movements.

The initiatives to voice the issues of the Dalit community on multiple digital media platforms, including websites like www.ambedkar.org, www.dalitindia.org, and www.roundtableindia.co.in, are influential in promoting intellectual debates and discussions. To combat caste discrimination, video-based news portals such as www.youtube.com/c/ DalitCamera, www.youtube.com/c/ the Activist, and www.dalitdastak.com gained popularity among intellectuals and the dalit community. Remediating the content among multiple platforms and presenting content in Hindi, English, and other regional languages is another important advantage to reach the maximum number of people. Though the study focused on Hindi language media initiatives, widespread regional language initiatives by Dalit intellectuals are also actively using the digital platforms for their cause.

Conclusion :

This study has outlined the contemporary new media practices of Dalits and their framework. In conclusion, this paper suggests that, despite some limitations, new media provides Dalits some space to articulate themselves. This mobilization of Dalits has unique characteristics and different expressions. The scale of their online mobilization makes this phenomenon unique in contemporary India.

However, there are some limitations and challenges that need to be studied further extensively. Hate speech, trolls, and memes are emerging materials that target Dalits as well as their campaigns. Dalits are marginazed even online and virtual spaces. The reinforcement of caste discourse has manifested in the modern spaces like websites, social media and digital initiative. The vulnerability increases with the threats the editors receive from anonymous people and state keeps them in the same manifestation of caste hierarchies. The evolving law around digital content especially news has been a growing legal hurdle for the dait and marginalized uprising.

- Saroj Kumar (Research Scholar)
Ph.D Scholar, AJKMCRC, Jamia Millia Islamia, New Delhi
- Dr. Krishna Sankar Kusuma
Associate Professor
AJKMCRC, Jamia Millia Islamia, New Delhi
Mob. 9818888863

References :

Asharaf, A. (2013, August 12). The untold story of Dalit journalists. Retrieved from The Hoot: http://asu.thehoot.org/media-watch/media-practice/the-untold-story-of-dalit-journalists-6956

Chauhan, A. (2017, October 1). Show your mustache' protest by dalits hits social media. Retrieved October 12, 2022, from Times of India : https://timesofindia.indiatimes.com/city/ahmedabad/show-your-mustache-protest-by-dalits-hits-social-media/articleshow/60896814.cms

Cooper, K. J. (1996, September 5). indias majority lower castes are minor voice in newspapers. Retrieved from The Washington Post : https://www.washingtonpost.com/archive/politics/1996/09/05/indias-majority-lower-castes-are-minor-voice-in-newspapers/4acb79e3-13d6-4084-b1d9-b09c6ed4f963/

Deuze, M. (2006). Participation, Remediation, Bricolage: Considering Principal Components of a Digital Culture. The Informtaion Society, 63-75.

Dijck, J. V., & Poell, T. (2013). Understanding Social Media Logic. Media and Communication, 2-14.

Jeffrey, R. (2000). India's Newspaper Revolution. London: Hurst & Company.

Kujat, C. N. (2016, Spring). Can the Subaltern Tweet? Can the Subaltern Tweet? A Netnography of India's Subaltern Voices Entering the Public via Social Media. Malmo, Malmo, Sweden: Malmo University.

Kumar, C. S. (2013, October). Dalits and alternative media. Periyar University. Salem, Tamilnadu, India: Shodhganga.

Kumar, S. (2021). #ShoesfortheDM campaign: An Expression of Dalit Identity through Social Media. Mass Media, 9(106), 4-12.

Lievrouw, L. A. (2011). Alternative and Activist New Media. Polity Press: Cambridge.

Logan, R. K. (2010). Understanding New Media. New York: Peter Lang.

Nayar, P. K. (2011). The digital Dalit: subalternity and cyberspace. The Sri Lanka Journal of the Humanities, 69-74.

Ninan, S. (2007). Headlines from the heartland. New Delhi: Sage publications.

OXFAM. (2019). Who Tells Our Stories Matters: Representation of Marginalised Caste Groups in Indian Newsrooms. New Delhi: OXFAM India.

Pridmore, J., & Falk, A. (2013, April). New media & social media: what's the difference? New Media and International Business, 1-3. Retrieved from Academia: http://www.academia.edu

Shinde, R. (2016, July 29). Social media helps Una dalits remain uncowed. Retrieved October 12, 2022, from The Hoot: http://asu.thehoot.org/media-watch/digital-media/social-media-helps-una-dalits-remain-uncowed-9529

Thakur, A. K. (2019). New Media and the Dalit Counter-public Sphere. SAGE Journal, 1-16.

"Forced Migration and Displacement as a Result of Climate Change is a Looming Crisis all over The World : An Analytical Study."

- Mr. Pawan Kumar

ABSTRACT :

In this research article, there will be a detailed discussion about the displacement and migration that has been happening in the world and within India due to the disasters caused by climate change in recent years. Disasters caused by climate change have completely disrupted human life. The severity of the displacement caused by climate change has affected people not only in terms of their livelihood but also their culture and way of life. India is the second-most populous country in the world and as a continuously developing nation, it is quickly carrying out development work. The dramatic changes in the landscape of the entire country due to developmental work are visible. Large-scale development work within the country has made the problem of displacement even more severe. The research article explains that most of the displacement is related to environmental degradation and climate-related events such as storms, hurricanes, floods, droughts, cloud bursts, landslides, sea level rise, coastal erosion, etc.

Objective of Research :

The objective of this research article is to conduct a critical study on the displacement and migration resulting from climate change-related emergencies. The aim is to shed light on the factors that contribute to environmental degradation and exacerbate displacement, as well as to seek solutions to the devastating problem of displacement.

Research Methodology : In this research article, the author has used primary data along with personal experiences, as well as various national and international research journals, published research papers, and articles in different newspapers and magazines.

Keywords : Climate change, cyclone, displacement, migration, environmental degradation, greenhouse gases, global warming, internal displacement, water crisis, climate refugee.

Introduction : Climate change refers to long-term changes in the weather-related conditions of any place. (2) This change that has occurred in the climate is considered in the context of a

period of thirty years or more. The current rate of global temperature rise is about 1.1 degrees Celsius. The continuous and uncontrolled emission of greenhouse gases has deepened the crisis of this phenomenon. The Future of Human Climate report by the American National Academy of Sciences states that by the year 2070, the annual temperature increase will be at least 29 degrees Celsius in nearly 19% of the Earth's surface. Currently, such high temperatures are only experienced in 0.8% of the Earth's surface, like the Sahara. In such a situation, more than three billion people will be forced to travel in search of suitable places and conditions, and nine billion people will experience an annual average temperature that is currently only experienced in the hottest deserts like Sahara. (3)

Due to weather events and conflicts within India, approximately 39,000,000 people have been displaced. According to a report from the Centre for Science and Environment, 76% of internal displacement cases around the world in 2020 were linked to climate-related disasters (4). The process of leaving one's previous place of residence and settling in a new place is called migration, which involves determining a certain distance and changing one's place of residence (5). In countries like India, displacement, migration, and exodus are primarily caused by disasters resulting from climate change. The most significant reason for displacement in Jammu and Kashmir is due to avalanches, while in Uttarakhand, it is due to the unpleasant events of heavy rainfall and cloud bursts during the monsoon season. Weather events are also a major cause of displacement in the eastern and southern states of India, including severe cyclones, storms, rising sea levels, coastal erosion, among other events. A report from the World Bank states that if immediate steps are not taken to reduce global emissions and development timelines are not met, more than 200 million people may have to leave their homes due to climate change in the next three decades, creating hotspots of migration (6).

According to a report by the International Organization for Migration (IOM) in 2022, there has been a dramatic increase in internal displacement due to disasters, conflicts, and violence. Therefore, it is not an exaggeration to say that the rate of both internal and external displacement due to the disasters caused by climate change has increased with even greater force. According to the World Migration Report, 30.7 million

new displacements occurred in 145 countries and regions in 2020 due to disasters. (7) The impact of climate change events such as storms and cyclones, which sometimes result in displacement or migration, cannot be ignored. In 2020, storms displaced 14.6 million people and floods displaced 14.1 million people. (8)

Human migration has been happening since ancient times, but the reasons that inspire and strengthen it have changed along with environmental degradation and intensity. Human mobility has a direct correlation with climate change or negative changes in the environment. Various factors could make human mobility stronger, including food security, water scarcity, economic security, global energy security, environmental security, and personal political security. (9) In addition, the search for better economic opportunities, the desire for higher education, struggles, and severe disasters may also be causes. The direct correlation between environmental degradation and the events that occur is displacement and migration due to the natural disasters caused by climate change, as well as water shortages, which have become a deepening problem in addition to catastrophes such as cyclones that come with changes in climate. These crises have forced a large part of the population to flee.

Almost all civilizations in the world have prospered along river valleys due to water. History tells us that in ancient times, dwellings and settlements were built near water sources. According to an estimate, the migration rate in drought conditions is higher than that of migration due to flooding. When an area experiences repeated droughts, the people there cannot tolerate the shock of these recurring droughts and cannot avoid the drought's impact. Ultimately, they are forced to flee to escape the effects of the drought.

A report from the World Bank, Web and Flow: Water Migration and Development, analysed internal data from 64 countries. The data was collected from 1960 to 2015 and found that the main cause of internal displacement in the contemporary world is the scarcity of water. (10) The population affected by the water crisis resides in developing and poor countries, for whom the water crisis has become a new challenge. The World Bank report found that in any region, the poorest would be the most vulnerable to the effects of low rainfall. Despite 80% of the poorest population not having

sufficient water, they will not be able to migrate due to economic constraints. (11) Climate events have been like a curse for human life, which have made human life completely busy and miserable. Many dreadful climate changes have made living difficult for people, and as a result, people have been forced to leave their ancestral homes. If negative changes continue to occur in the environment or environmental degradation persists, migration and displacement will be the biggest challenge facing the world soon. Therefore, it is necessary to think of some effective measures to prevent migration and displacement, so that a large part of the world's population can be saved from being displaced. The "Rebuilding and Enhancing Program for settle Refugees and Planning for the Impact of Climate Change on Migration" needs to be implemented quickly to resettle refugees. According to the Groundswell Report, global emissions can be reduced by up to 80% by using greenhouse gases, particularly reducing the carbon footprint.(12)

Conclusion :

The causes of displacement and migration due to climate change result in people having to deal with many problems. Events related to climate change are responsible for spreading problems such as displacement and migration to a great extent. These problems become stronger due to the inspiration of migration. Examples of such problems include debt, bonded labor, early and forced marriage, trafficking of women, prostitution, modern slavery, and so on. It becomes the responsibility of every country in the world to prepare an effective solution to deal with all these problems and their elimination. Some countries have already politically accepted migration and displacement, and work is underway in various parts of the world to gain political approval for displacement and migration. Every country should see it as a serious problem and prepare an outline of the causes, consequences, remedies, and suggestions for displacement and migration related issues. Efforts should be made to reduce the negative effects associated with the environment, and commitments to agreements that reduce global greenhouse gas emissions should be strictly followed. By moving on the path of inclusive development, which is environmentally friendly, we can strike at the roots of the crisis of displacement and migration. Environmentally conscious individuals can combat the crises of displacement and expansion on the path of inclusive development.

Immediate and concrete actions are necessary to address the solutions to the problems of displacement and expansion generated by the negative effects of climate change. The entire world must come together on a platform to reduce the negative impacts of climate change so that there is a decrease in the rate of displacement and expansion. Action plans must be developed from the local to the national and international level. Recent efforts have not lived up to their targets, therefore it becomes the moral responsibility of every country to provide shelter to those who need it. There is a need to be less formal in refugee-related treaties and adopt a non-resistant approach to providing shelter with dignity to all those in need, in every country.

- Mr. Pawan Kumar
Assistant Professor of Geography
Govt. College Birohar, Jhajjar Haryana.
Contact. 9891800340

References :

1. http://hdma.gov.in/en/citizen-corner/flood
2. Savinder, Singh, Climatology, Prayag Pustak Bhavan, 2008, page number 351
3. Future of the human climate niche, PNAS, May 26, 2020, Pg. 3
   https://www.pnas.org/doi/10.1073/pnas.1910114117
4. Richard, Mohapatra, Kiran, Pandey, Down to Earth, February 2022, page 31
5. https://bhoogol net/%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%B8/
6. Navbharat, Times, 13 September 2021
7. World Migration Report 2022, page no- 237 https://publications-iom-int/books/world-migration-report-2022
8. World Migration Report 2022, page no- 53
9. जलवायु की टीस, डाउन टू अर्थ, जून 2022, पृष्ठ संख्या 24
10. रिचर्ड महापात्रा, किरण, पांडे, डाउन टू अर्थ, फरवरी 2022, पृष्ठ संख्या 37
11. रिचर्ड महापात्रा, किरण, पांडे, डाउन टू अर्थ, फरवरी 2022, पृष्ठ संख्या 37
12. Groundswell Report Acting on Internal Climate Migration Part 2, 2021, page 16, 17

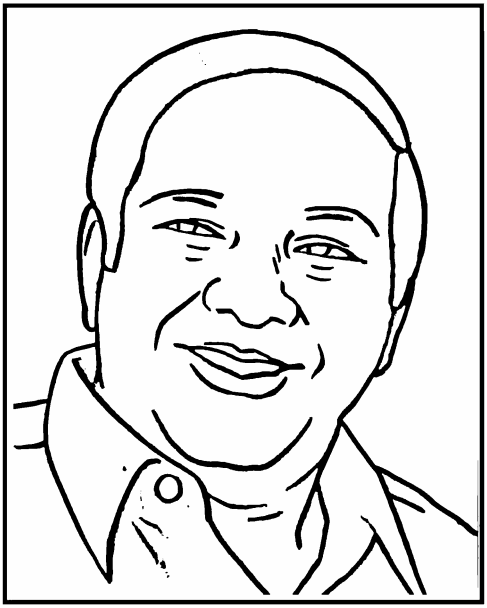

मैं दबे कुचले समाज को जिल्लत
भरी जिंदगी से निकाल कर
मान सम्मान वाली जिंदगी
देकर उसको अपने पैरों पर
खड़ा देखना चाहता हूँ।

बहुजन नायक कांशीराम

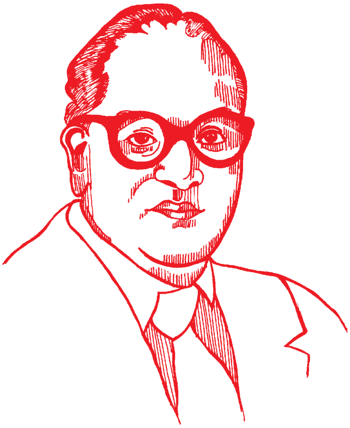

मेरे समाज की लड़कियों को
शिक्षा की जरूरत है
व्रत की नहीं, क्योंकि लोग
डिग्रियाँ पूछतें है व्रत नहीं ॥

डॉ. बी.आर. अम्बेडकर

पंजीयन संख्या
RNI No. MPHIN/2002/9510

डाक पंजीकृत क्रमांक मालवा डिवीजन/204/2021-2023 उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठा में ,
____

पत्र व्यवहार का पता :
20, बागपुरा, सांवेर रोड,
उज्जैन 456 010 (म.प्र.)

प्रकाशक, मुद्रक **पिंकी सत्यप्रेमी** ने भारती दलित साहित्य अकादमी की ओर से
मालवा ग्राफिक्स, 29, वररुचि मार्ग, गुरुद्वारे के सामने, फ्रीगंज, उज्जैन फोन : 0734-4000030 से मुदित एवं
20, बागपुरा, सांवेर रोड, उज्जैन 456 010 (म.प्र.) फोन : 0734-2518379 से प्रकाशित।

सम्पादक : डॉ. तारा परमार